AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

पर्यावरणवाद का गांधीवादी दर्शन

Manish Sharma
Research Scholar
University of Technology, Jaipur
Dr. Shweta Rai
Supervisor
University of Technology, Jaipur

DECLARATION: I ASAN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BYME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDINGCOPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANYOF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THEREASONOF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITYON WEBSITE/UPDATES,IHAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANYPUBLICATIONMATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सार

भारत में हो रहे पर्यावरण आंदोलन गांधीवादी सिद्धांतों का एक बड़ा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। लेकिन इन आंदोलनों पर किए गए अध्ययनों से जरूरी नहीं कि गांधी उनके साथ पर्याप्त रूप से जुड़े हों। एक अहिंसक और आत्मनिर्भर ग्राम समुदाय बनाने की इच्छा पर गांधी के ध्यान को देखते हुए, विभिन्न सामाजिक आंदोलनों में उनकी प्रासंगिकता काफी महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए, समकालीन युग में हो रहे पर्यावरणीय आंदोलनों के संदर्भ में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता को अध्ययन की मुख्यधारा में लाने की अधिक आवश्यकता है। कट्टरवाद और आतंकवाद, नागरिक संघर्ष, वैश्विक क्षेत्र में नेता बनने का प्रयास करने वाले राष्ट्रों और मातृ प्रकृति के बढ़ते विनाश से उत्पन्न अराजकता और कहर से निपटने के लिए संघर्ष करने वाली दुनिया में, गांधी के सिद्धांत अप्रासंगिक और अवास्तविक प्रतीत हो सकते हैं। आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण ने पहले ही अमीरों और गरीबों के बीच की खाई को चौड़ा करने का काम किया है।

कीवर्ड: पर्यावरणवाद, गांधीवादी दर्शन, महिलाओं, पर्यावरण

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

परिचय

युवा पीढ़ी में गांधी के बारे में बहुत कम या कोई जागरूकता नहीं है और वे उन्हें दूर के इतिहास की एक पुरानी और विनम्र भावना के रूप में देखते हैं। ऐसा इसलिए था क्योंकि पुरानी पीढ़ी ने युवाओं को सही तरीके से शिक्षित करने के लायक नहीं देखा था। गांधीवादी मूल्यों को फिर से जगाना। सत्याग्रह और सर्वोदय के साथ उनकी सफलताओं ने देश को गांधी के साथ फिर से आमने-सामने ला दिया है। महिलाओं की सुरक्षा, पर्यावरण को बचाने, जानवरों की रक्षा आदि से संबंधित मुद्दों के संबंध में शांतिपूर्ण विरोध अक्सर देखे जा रहे हैं। उपवास, धरना, रैलियां, गिरफ्तारी और सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार बटोरने के तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। (1)

गांधी भी दुनिया भर में कई लोगों की यादों और दिलों में बसे हुए हैं। अतीत से उनकी आवाज ने नैतिक और अहिंसक साधनों की मदद से एक स्वस्थ सामाजिक बनाने के बारे में संदेश फैलाने के लिए 21वीं सदी में नस्ल, जातीयता और पंथ की सीमाओं को पार कर लिया है। यह वैश्विक नेताओं, मशहूर हस्तियों, कार्यकर्ताओं आदि द्वारा की गई गतिविधियों और कार्यों से स्पष्ट होता है, जैसे कि अमेरिकी नागरिक अधिकार कार्यकर्ता, सीजर शावेज, महामहिम दलाई लामा, डेसमंड टूटू, अन्ना हजारे, थिच नट हान, अमेरिकी लोक गायक और कार्यकर्ता जोन बाएज़, आंग सान सू की, बराक ओबामा, फिलिस्तीनी नेता मुबारक अवाद, पर्यावरण कार्यकर्ता जोआना मैसी और एफ. डब्ल्यू. डी क्लार्क और कई अन्य। (2)

गांधी पर प्रभाव

अपनी आत्मकथा, द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ' और अपने कई लेखों में, गांधी ने अपने जीवन के दौरान उन पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों के बारे में ईमानदारी और ईमानदारी से

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

बात की है। वह गीता और बाइबिल जैसे धार्मिक ग्रंथों, विभिन्न धार्मिक प्रथाओं जैसे उपवास, जैन धर्म, बौद्ध धर्म आदि की बात करता है क्योंकि वे उसके आदर्शों की नींव रखते हैं। गांधी ने टॉल्स्टॉय, रस्किन, थोरो, महापुरुषों के प्रभाव को स्वीकार किया है, जिन्होंने अपने जीवन में कुछ असाधारण और पूरा करने का फैसला किया। आइए हम उस महापुरुष के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों पर विचार करें और समझें कि कैसे वे उस व्यक्ति के रूप में विकसित हुए जो वे थे। (3)

शास्त्रों का प्रभाव:

भगवद् गीता

अगर कोई ऐसी चीज थी जिसका गांधी पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ा, तो वह भगवद्गीता थी। यह काफी विडंबना है कि गांधी पहली बार इंग्लैंड में अपने दोस्तों, ओल्कॉट भाइयों के माध्यम से भगवद गीता के पास आए। उन्होंने सर एडविन अर्नोल्ड के द सॉन्ग सेलेस्टियल' के माध्यम से उन्हें धार्मिक कविता से परिचित कराया। एक बार जब गांधी ने इसे पढ़ना शुरू किया, तो यह उनके लिए आध्यात्मिक मार्ग बन गया। वे भगवद् गीता की निःस्वार्थ सेवा के सिद्धांत से सबसे अधिक प्रभावित थे। (4)

धार्मिक प्रभाव जैन धर्म

गांधी बचपन से याद करते हैं कि गुजरात में जैनियों की संख्या काफी महत्वपूर्ण थी। अपनी आत्मकथा में वे जारी रखते हैं, इसका प्रभाव हर जगह और सभी अवसरों पर महसूस किया गया था। 'जैन धर्म के साथ उनका सीधा जुड़ाव उनकी मां पुतलीबाई की मृत्यु के बाद शुरू हुआ। जब गांधी इंग्लैंड से लौटे तो उन्हें पता चला कि उनकी मां अब नहीं रहीं। इसने उसे कोर तक झकझोर दिया। रायचंद भाई की संगति में उन्हें सुकून मिला। गांधी से उनका परिचय डॉ. पी. जे. मेहता ने

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

कराया था। (5)

बुद्ध धर्म

गांधीवाद के विकास पर बौद्ध धर्म का भी बहुत प्रभाव पड़ा। बौद्ध धर्म के दर्शन में एक आठ गुना पथ शामिल है जो चरण हैं लेकिन एक क्रम में नहीं बल्कि जिन्हें हमारे दैनिक जीवन में आत्मसात करना है।

व्यक्तित्व का प्रभाव:

लियो टॉल्स्टॉय

गांधी के जीवन पर टॉल्स्टॉय का प्रभाव नायाब है। काउंट लियो निकोलायेविच टॉल्स्टॉय ने गांधी के आध्यात्मिक, दार्शनिक और राजनीतिक विचार निर्माण को प्रभावित किया। टॉल्स्टॉय रूस में एक काउंट थे, जिसके तहत एक बड़ी संपत्ति और सर्फ़ काम करते थे। लेकिन क्रीमिया युद्ध, उसके भाई की मृत्यु और युद्ध के समय की हिंसा ने उसे यह अहसास करा दिया कि हिंसा और युद्ध में व्यर्थता है। उनके सामने जीवन और मृत्यु के प्रश्न थे। उसने आत्महत्या के बारे में भी सोचा। जब बेहतर समझ प्रबल हुई, तो रूसियों ने विज्ञान सहित विभिन्न विषयों की खोज के माध्यम से उत्तर तलाशना शुरू किया। अंत में, टॉल्स्टॉय ने श्रमिक वर्ग से अपने उत्तर प्राप्त करने का निर्णय लिया। (6)

गांधीवादी दर्शन

सत्य और अहिंसा

ये दोनों अवधारणाएँ हमेशा गांधीवादी दर्शन का एक अभिन्न अंग थीं, एक दूसरे के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थीं और व्यावहारिक रूप से सत्याग्रह के भीतर लागू की गई थीं। सत्य के लिए

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

संस्कृत शब्द 'सत' या 'होना' था। वास्तविकता में मौजूद हर चीज सत्य थी, जिसका परमात्मा से घनिष्ठ संबंध था। दूसरे शब्दों में, सत्य ही ईश्वर था, न कि इसके विपरीत। जब किसी ने सच्चे ज्ञान की खोज की, चाहे वह लोगों से जुड़ा हो या परिस्थितियों से, उसने ईश्वर के साथ अधिक निकटता प्राप्त की। सत्य के अभाव में सच्चा ज्ञान (संस्कृत में 'चित्त') अप्राप्य था। सत्य के मार्ग से सत्य ज्ञान प्राप्त करने पर आनंद (संस्कृत में आनंद) भी प्राप्त होता है। गांधी और उनके जैसे अन्य आध्यात्मिक लोगों ने हमेशा ईश्वर को सत-चित-आनंद के रूप में संदर्भित किया, जिसका अर्थ था कि निर्माता सत्य-ज्ञान और आनंद का एक संयोजन था।(7) सत्य के रूप में ईश्वर मेरे लिए कम से कम कीमत से परे एक खजाना रहा है; वह हम में से प्रत्येक के लिए ऐसा हो। जब कोई व्यक्ति इसे पूरी तरह से समझ लेता है, तो जीवन में किसी भी तरह के नियम/सिद्धांत का पालन करना आसान हो जाता है, ठीक उसकी आखिरी सांस तक। यह समझना भी उतना ही अनिवार्य था कि सत्य/सत्य की अवधारणा का संबंध केवल बोले गए शब्द से नहीं था। सत्य को इसकी पूर्णता में तभी महसूस किया जाएगा, जब व्यक्ति इसे विचार और क्रिया में भी अभ्यास करेगा।

सत्याग्रह

गांधी ने सत्याग्रह की कई तकनीकों के साथ-साथ व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर, स्थिति की आवश्यकता के साथ तालमेल बिठाया। जन सत्याग्रह का सबसे लोकप्रिय प्रकार सविनय अवज्ञा था, क्योंकि यह ब्रिटिश राज के दौरान कई बार लागू हुआ था। अंग्रेजों द्वारा शुरू किए गए अत्याचारी नमक कानूनों को तोड़ने के लिए पोरबंदर से अरब सागर तक दांडी मार्च एक उदाहरण था। इससे कोई भी यह समझ सकता है कि सविनय अवज्ञा, दमन के लिए निर्धारित सरकारों

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

द्वारा शुरू किए गए कानूनों, या किए गए कार्यों के खिलाफ बड़े पैमाने पर प्रतिरोध से संबंधित है। प्रतिरोध नागरिकों द्वारा अधिकार के खिलाफ किया गया था। यह सभ्य और विनम्र होना था, अहिंसक और अनुशासित तरीके से आयोजित किया जाना था, जिसमें प्रतिभागी अदालत की गिरफ्तारी के लिए भी तैयार थे। जेल जाने का विचार प्रतिद्वंद्वी को यह दिखाने के लिए था कि प्रदर्शनकारी संबंधित कारण की कितनी परवाह करता है और चाहता है कि अधिकारियों को भी उसी कारण की सच्चाई का एहसास हो। इस प्रकार, प्रदर्शनकारी ने कोमल अनुनय के माध्यम से विरोधी में हृदय परिवर्तन की आशा की, न कि ज़बरदस्ती की।

साध्य और साधन की धारणा

अधिकांश लोगों, विशेष रूप से राजनीति के क्षेत्र में, का मानना था कि साधन और साध्य के बीच केवल एक तकनीकी कड़ी मौजूद है। यदि नैतिकता तस्वीर में प्रवेश नहीं करती है, तो इसे केवल साध्यों के निर्णयों से जोड़ा जाना था, न कि साधनों के साथ। साधन अपने तरीके से चलेंगे, जो प्रकृति में गलत या सही हो सकता है। हालाँकि, गांधी ने इस सामान्य हठधर्मिता के साथ जाने से इनकार कर दिया कि अंत साधनों को उचित ठहराता है। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्होंने नैतिकता, धार्मिकता और पवित्रता की अवधारणाओं को सामाजिक, व्यक्तिगत, आर्थिक या राजनीतिक हर व्यक्ति और हर क्रिया को मापने के लिए मापदंड के रूप में इस्तेमाल किया था। दूसरों के विपरीत, महात्मा साधन और साध्य को पूरी तरह से भिन्न श्रेणियों के रूप में नहीं देखते थे, बल्कि कर्म के नियम के माध्यम से एक दूसरे से निकटता से जुड़ी अवधारणाओं के रूप में देखते थे। कर्म के नियम के अनुसार, प्रत्येक क्रिया का एक परिणाम होता है, जो विषय और वस्तु को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। एक व्यक्ति के कर्म कर्म उसकी वर्तमान यात्रा और उसके बाद के जीवन को निर्धारित करेंगे। (8)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

आधुनिक सभ्यता की आलोचना

औद्योगिक क्रांति के आगमन के साथ, अंग्रेजों को अपने साम्राज्य को भारतीय भूमि में अधिक मजबूती से जमाने का अवसर मिला। उन्होंने शिक्षा की शुरुआत, कानून अदालतों की स्थापना, रेलवे नेटवर्क के निर्माण आदि के माध्यम से भारतीय समाज का आधुनिकीकरण करना शुरू किया। बदलती परिस्थितियों ने गांधी को महसूस कराया कि पश्चिमी सभ्यता के आगमन के कारण उनके देश को अपमानित और नष्ट किया जा रहा है। अब तक, मानव जाति ने प्रकृति के साथ एक अविभाज्य संबंध प्रदर्शित किया था। हालाँकि, सभी प्रकार की मशीनरी के आने से यह बंधन कमजोर हो जाएगा। आखिरकार, मशीनरी का उपयोग औद्योगीकरण का एक अभिन्न अंग था। वे पर्यावरण के अनुकूल शारीरिक श्रम का स्थान लेंगे जो कृषि प्रधान ग्राम समुदायों की पहचान थी।

समाज, मनुष्य और प्रकृति पर आधुनिक सभ्यता के प्रभाव

गांधी ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि आधुनिक मशीनों ने एक नई अवधारणा, यानी सार्वभौमिकता की शुरुआत की है। इसका मतलब यह हुआ कि हर कोई एक ही दिशा में सोचने लगता है। लोगों में समान जीवन शैली का पालन करने, एक दूसरे के विचारों और कार्यों को उधार लेने आदि की प्रवृत्ति होती है। नतीजतन, व्यक्तित्व या अद्वितीयता को जीवित रखना अधिक से अधिक कठिन होता जा रहा था। सार्वभौमवाद व्यक्तिगत पहल को नष्ट करने या यहां तक कि एक उपन्यास तरीके से कुछ नया करने की इच्छा को नष्ट करने के लिए प्रवृत्त हुआ। इसके अलावा, सरकारी संस्थानों ने केंद्रीकरण पर ध्यान केंद्रित किया और एक आधिपत्यपूर्ण तरीके से व्यवहार किया। अंततः, समाज प्रकृति में अधिक पूंजीवादी बनने के लिए प्रवृत्त हुआ। बदले में, यह सभी प्रकार के अवांछनीय गुणों, जैसे अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या और लालच, हिंसा आदि के आगमन

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

की ओर ले जाएगा। इसलिए, भारत के लिए यह अनिवार्य था कि वह स्वराज और स्वदेशी की मांग करे, यदि वह मुक्त रहना चाहता है। पश्चिमी सभ्यता की बेड़ियाँ। आत्माविहीन मशीन की तरह कार्य करने वाली अवस्था में आत्मा वाला कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र और सुखी रहने की आशा नहीं कर सकता। (9)

सर्वोदय

गांधी के सभी विचार सर्वोदय' के एक जीवंत सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक दर्शन में परिणत होते हैं। सर्वोदय शब्द का अर्थ है सभी का उत्थान। 1990 के दशक की शुरुआत में गांधी ने जॉन रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' पढ़ी और इससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पुस्तक के सिद्धांतों के अनुसार अपने जीवन को बदलने का फैसला किया। पुस्तक में प्रस्तुत जीवन के तीन तथ्यों से गांधी सबसे महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित थे:

- यह कि सबकी भलाई में ही एक व्यक्ति की भलाई निहित है।
- कि एक वकील के काम का उतना ही महत्व है जितना नाई के काम का है, क्योंकि सभी को अपने काम से अपनी आजीविका कमाने का समान अधिकार है।
- यह कि जीवन श्रम का है, अर्थात मिट्टी के किसान का जीवन और दस्तकार का जीवन जीने योग्य है।

गांधी ने स्वीकार किया कि वे पहले सिद्धांत को जानते थे। उन्होंने कहा कि वह दूसरे के बारे में अस्पष्ट रूप से जानते थे। लेकिन तीसरा कभी उसके दिमाग में नहीं आया था। गांधी कहते हैं, इस आखिरी तक मुझे दिन के उजाले की तरह स्पष्ट कर दिया कि दूसरे और तीसरे पहले में समाहित हैं। मैं इन सिद्धांतों को अभ्यास (2013) में कम करने के लिए तैयार भोर के साथ उठा।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

महात्मा गांधी का पर्यावरणवाद

गांधी के पर्यावरणवाद और समकालीन मानव समाज के लिए इसकी प्रासंगिकता पर अब बहुत गंभीरता और उत्साह के साथ चर्चा की जा रही है। लेकिन अगर हम पर्यावरणवाद पर गांधी के विचारों को उनके लेखन में तलाशने लगें तो शायद हम सफल न हों। कोई भी काम हाथ में लेने से पहले हमें यह ध्यान रखना होगा कि गांधी के विचार चरित्र में समग्र हैं। वह अलगाव में कोई विचार व्यक्त नहीं करता है। इसलिए, एक बार जब हम उस परिप्रेक्ष्य को बदल देते हैं जिसके साथ हम गांधीवादी विचारों का अध्ययन करना चाहते हैं, तो हम वास्तव में उन्हें उनके सभी लेखन में पाएंगे। वास्तव में यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब गांधी अहिंसा की बात करते हैं, उदाहरण के लिए, वे लोगों, जानवरों, प्रकृति और हमारे चारों ओर सब कुछ के साथ व्यवहार करते हुए हर जगह अहिंसा की बात कर रहे हैं। वह सिर्फ लोगों के प्रति अहिंसा या राजनीतिक विरोध के दौरान अहिंसा की बात नहीं करता है। इस फॉर्मूले से गांधी के सभी विचार हर चीज पर पूरी तरह लागू होते हैं। ऐसे में हमें उनके पर्यावरणवाद के दर्शन को समझने की जरूरत है। यह समझना भी आवश्यक है कि 20वीं शताब्दी की शुरुआत में गांधी द्वारा व्यक्त किए गए कई विचार आधुनिक पर्यावरणवाद और पारिस्थितिकीवाद में आवश्यक सिद्धांत बन गए। इस तथ्य को स्थापित करने के लिए कि गांधीवादी पर्यावरणवाद पारिस्थितिकीवाद के अलावा और कुछ नहीं है, हमें गांधी, पर्यावरणवाद और पारिस्थितिकीवाद के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है। (10)

पर्यावरणवाद और पारिस्थितिकी

पर्यावरणवाद एक राजनीतिक और नैतिक आंदोलन के रूप में उभरा, जो पर्यावरण को बदलना और

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

सुधारना चाहता था, जो मनुष्य की विकासात्मक गतिविधियों के तहत काफी हद तक प्रभावित हुआ था। मानवीय क्रियाओं के प्रभाव ने प्रकृति को इस प्रकार प्रभावित किया कि उसके साथ मनुष्य के सम्बन्धों की समीक्षा करनी पड़ी। यह, बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, पर्यावरणवाद के विकास का कारण बना। यह एक आंदोलन है जो पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने और इसे और नुकसान और विनाश से बचाने की कोशिश करता है।

एक दर्शन के रूप में पर्यावरणवाद को आगे दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है, मानवकेंद्रित और बायोसेंट्रिक। नृविज्ञान मुख्य रूप से मानव जीवन पर पर्यावरणीय क्षरण के प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे मनुष्य सभी गतिविधियों के केंद्र में हो जाता है। जबकि बायोसेंट्रिज्म यह मानता है कि जीवन के सभी रूप समान विचार के पात्र हैं, और यह कि मनुष्य जीवन प्रणाली का एक हिस्सा मात्र हैं। 1972 में बुखारेस्ट में एक सम्मेलन में, अर्ने नेस ने दोनों के बीच पहला अंतर किया। उन्होंने दोनों को शैलो इकोलॉजी और डीप इकोलॉजी करार दिया। उनके अनुसार, इस अंतर का कारण इस तथ्य पर आधारित है कि मानवकेंद्रवाद या उथली पारिस्थितिकी में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति एक बहुत ही सतही दृष्टिकोण शामिल है।

यह मुख्य रूप से औद्योगिक राष्ट्रों में प्रदूषण और संसाधनों की कमी से संबंधित है, और केवल मूल्यों और प्रथाओं में मौलिक परिवर्तन के बिना व्यवस्था में मामूली सुधार के साथ है। यह औद्योगिक राष्ट्रों के स्वास्थ्य और समृद्धि से संबंधित है।

आधुनिक सभ्यता की आलोचना

गांधी की आधुनिक सभ्यता की आलोचना उनके पर्यावरणवाद के केंद्र में है। गांधी की आधुनिक सभ्यता की समालोचना इस मायने में संपूर्ण थी कि उन्होंने आधुनिक सभ्यता की विभिन्न इकाइयों

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

को आपस में जुड़ा हुआ और परस्पर संबंधित देखा। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तिका हिन्द स्वराज में इसकी कटु आलोचना की है। किताब में गांधी पश्चिमी सभ्यता को शैतानी बताते हैं क्योंकि यह गरीब और पिछड़े देशों का शोषण करती है। यह भी एक ऐसी सभ्यता है जिसने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग बना दिया। गांधी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस विकास के खिलाफ नहीं थे। बल्कि उन्हें पश्चिम की यह भावना काफी पसंद आई। वे पश्चिमी देशों द्वारा शोषण के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के तरीके के खिलाफ थे। उनका मानना था कि इसने समाज को विभाजित किया और विशेषाधिकार प्राप्त लोगों ने इसका उपयोग अपने हितों की रक्षा और उन्नति के लिए किया। (11)

खादी और अहिंसा

गांधी जोर देकर कहते हैं कि गांवों में खादी उद्योग की स्थापना किसान को आय का एक अतिरिक्त और वैकल्पिक स्रोत प्रदान करेगी। गांधी के लिए खादी वह सूरज था जिसके चारों ओर अन्य सभी ग्राम उद्योग घूमते थे। खादी और ग्रामोद्योग गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

स्वदेशी

गांधी को यकीन था कि पश्चिमी पूंजीवादी देशों का उद्योगवाद और बड़े पैमाने पर उत्पादन समाज में असमानता को बढ़ावा देगा। भारत के लिए उनका उद्देश्य अहिंसक, विकेन्द्रीकृत ग्राम समुदाय की स्थापना करना था। तो उसके लिए विशाल कारखाने जो बड़े पैमाने पर उत्पादन के स्रोत थे, इन योजनाओं में पूरी तरह से अनुपयुक्त थे। वह चाहते थे कि ग्राम समुदाय अपना प्रशासन खुद करें। इसका अर्थ था अपने स्वयं के संसाधनों की देखभाल करना और इलाके के सिरों को प्राप्त

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

करने में भाग लेना। स्वदेशी, गांधी के अनुसार, इस उद्देश्य की पूर्ति करेगा। वह स्वदेशी के अभ्यास को एक नए स्तर पर ले गए। गांधी ने इसे एक नया अर्थ दिया और दावा किया कि स्वदेशी का अर्थ आत्म निर्भर अर्थव्यवस्था है।

समकालीन युग अर्ने नेस में गांधी के पर्यावरणीय विचारों का प्रभाव

यदि गांधी अपने जीवन में कई लोगों से प्रभावित थे, तो दुनिया भर में और भी कई लोग थे, जो उनके संचार के तरीकों और प्रकृति के प्रति सम्मान से प्रभावित थे। उनमें से एक नार्वे के दार्शनिक और पारिस्थितिकीविद् अर्ने नेस थे। प्रकृति के प्रति उनका प्रेम ऊबड़-खाबड़ नॉर्वेजियन ग्रामीण इलाकों में शुरू हुआ, जिसमें छोटे शहरों में रहने वाले हर व्यक्ति ने पर्यावरण के साथ एक नैतिक संबंध बनाए रखा। बाद में, वे डच दार्शनिक स्पिनोज़ा से प्रभावित हुए, जिन्होंने,

"...प्रकृति की एकता और पवित्रता की आध्यात्मिक दृष्टि को बनाए रखा और माना कि ज्ञान का उच्चतम स्तर एक सहज और रहस्यमय ज्ञान था जहां विषय/वस्तु के भेद गायब हो गए क्योंकि मन पूरी प्रकृति के साथ एकजुट हो गया।

राष्ट्रीय पर्यावरण आंदोलनों पर गाँधी का प्रभाव

गांधी ने 1928 में यंग इंडिया में टिप्पणी की थी, भगवान न करे कि भारत कभी पश्चिम के तरीके के बाद औद्योगीकरण करे। एक छोटे से द्वीप साम्राज्य (इंग्लैंड) का आर्थिक साम्राज्यवाद आज दुनिया को बेड़ियों में जकड़े हुए है। यदि 300 मिलियन का एक पूरा देश इसी तरह का आर्थिक शोषण करता है, तो यह दुनिया को टिड्डियों की तरह नंगा कर देगा।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

हालाँकि, इससे पहले कि वह पहली बार उस तरह के कहर को देख सके, जो मुख्य रूप से औद्योगीकरण पर केंद्रित विकासात्मक नीतियों की स्वीकृति के कारण उसके देश को स्वतंत्रता के बाद का सामना करना पड़ा। उन्हें जो डर था वह सच हो गया था और पर्यावरण उसी के लिए भारी कीमत चुका रहा था। नतीजतन, भारत ने देश भर में पर्यावरण आंदोलनों में वृद्धि देखी है।

चूँकि दुनिया भयानक रूप से संघर्ष से ग्रस्त और प्रकृति में आक्रामक होती जा रही थी, इसलिए यह माना गया कि संघर्षों को हल करने के वैज्ञानिक तरीके खोजे जाने चाहिए। इस दिशा में, व्यक्तियों, समूहों या राष्ट्रों के बीच संघर्षों के समाधान वाली तकनीकों का अवलोकन और प्रयोग किया जा रहा था। हालाँकि, केवल गांधी ही पर्यावरणीय मुद्दों को हल करने के लिए समान तकनीकों, और इससे भी अधिक उपन्यासों का उपयोग करने के विचार के साथ आ सकते थे। इसका मतलब यह था कि मानव जाति और प्रकृति माँ के बीच के झगड़ों को एक विशेष रणनीति के प्रयोग से सुलझाया जा सकता है। ऐसी रणनीति थी सत्याग्रह। गांधी ने महसूस किया कि विरोधी में, विशेष रूप से एक नैतिक परिवर्तन लाने के लिए यह सबसे अच्छा तरीका था। संघर्ष को सुलझाने का प्रयास करने वाला व्यक्ति हिंसा का सहारा नहीं लेगा, भले ही दूसरे पक्ष ने कैसा व्यवहार किया हो।

गांधीवादी दर्शन के अनुयायियों के लिए यह रणनीति अत्यधिक उपयोगी साबित हुई, जिन्होंने पर्यावरण विनाश को रोकने के लिए विभिन्न आंदोलनों की शुरुआत की। सबसे प्रमुख उदाहरण चिपको आंदोलन, साइलेंट वैली बचाओ और नर्मदा बचाओ आंदोलन हैं। उत्तराखंड की पहाड़ियों में गांधीवादियों के कुशल मार्गदर्शन से ग्रामीण भारत में वन नीतियों को बनाने में सफल रहे। यह प्रसिद्ध चिपको आंदोलन था जो दुनिया के लिए अनुसरण करने के लिए एक उदाहरण बन गया।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

साइलेंट वैली बचाओ आंदोलन अजीबोगरीब था। यह एक पर्यावरण आंदोलन था जो केरल के उष्ण कटिबंधीय वनों को वनों के बीचोबीच बनाई जा रही पनबिजली परियोजना से बचाने के लिए लड़ा गया था। इसकी ख़ासियत यह थी कि यह आन्दोलन उस जंगल को बचाने के लिए था जिसके आस-पास कहीं भी मानव निवास नहीं था। फिर भी लोग इस बात की गहराई तक जाने में कामयाब रहे कि वनों की कटाई का क्षेत्र की पारिस्थितिकी पर क्या प्रभाव पड़ेगा। प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व के गांधीवादी आदर्श इस आंदोलन का आधार थे। नर्मदा बचाओ आंदोलन सरदार सरोवर परियोजना के खिलाफ था, जो एक बहुउद्देश्यीय परियोजना थी, जिसे आंदोलनकारियों ने महसूस किया कि यह लोगों के जीवन और पारिस्थितिकी के साथ तबाही का कारण बनेगी। आंदोलन गांधीवादी सिद्धांतों के साथ चलाया गया था जिसमें लघुता और सरलता पर जोर दिया गया था। अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान विश्व बैंक की ऋण नीतियों की प्रकृति को बदलने में यह आंदोलन सफल रहा। (12)

निष्कर्ष

भारत में पर्यावरणीय आंदोलनों के ये अकेले उदाहरण नहीं हैं। हालाँकि, सभी आंदोलनों में एक बात समान थी। उनमें से प्रत्येक ने अहिंसा और सत्य के गांधीवादी मार्ग को अपनाया। उनका मानना था कि यदि वे एक उच्च अस्तित्व में अपने विश्वास को बनाए रखते हैं और सत्य की तलाश करते हुए अपने प्रतिद्वंद्वी से अलग होने के लिए सहमत होते हैं, तो वे अपने लक्ष्यों में सफल होंगे। हर मामले में, राज्य/केंद्र सरकार और लोगों के बीच या हित समूहों और ग्रामीण आबादी के बीच हितों का टकराव पैदा हुआ। लोगों को प्रभावी सत्याग्रही बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाना था, जो अहिंसा और प्रेम के माध्यम से दुनिया को जीत सकते थे। गांधी के अनुसार, किसी भी

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

प्रकार के पर्यावरणीय अन्याय या हाशियाकरण को संरचनात्मक हिंसा का उदाहरण कहा जा सकता है। हिंसा से उनका मुकाबला करने से किसी प्रकार का परिणाम नहीं निकलेगा। इसलिए, अंतिम हथियार सत्याग्रह था।

संदर्भ

1. डॉब्सन ए, पर्यावरणवाद और पारिस्थितिकीवाद, समकालीन राजनीतिक विचार में: एक पाठक और गाइड, एलन फिनलेसन द्वारा एड, एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013
2. फॉक्स डब्ल्यू।, एक ट्रांसपर्सनल इकोलॉजी की ओर: पर्यावरणवाद के लिए नई नींव विकसित करना, अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1995
3. गुहा आर।, एक व्यक्ति को कितना उपभोग करना चाहिए? : भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में पर्यावरणवाद, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 2016
4. हेवर्ड टी., पारिस्थितिकीवाद और पर्यावरणवाद, समकालीन राजनीतिक विचार में: एक पाठक और गाइड, एलन फिनलेसन द्वारा एड, एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013
5. खोशू टी. और मूलक्कट्टू जे., महात्मा गांधी और पर्यावरण: गांधीवादी पर्यावरण विचार का विश्लेषण, ऊर्जा और संसाधन संस्थान, 2019
6. मूलक्कट्टू जे. और खोशू टी., महात्मा गांधी और पर्यावरण: गांधीवादी पर्यावरण विचार का विश्लेषण, ऊर्जा और संसाधन संस्थान (टीईआरआई), 2010
7. प्रसाद एम., समकालीन भारत में पर्यावरण, विकास और समाज: एक परिचय, भारत: मैकमिलन प्रकाशन, 2018
8. रावत ए., फॉरेस्ट मूवमेंट्स इन उत्तर प्रदेश हिल्स 1906-1947 इन एनवायरनमेंटल रीजनरेशन

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

इन हिमालयाज़: कॉन्सेप्ट्स एंड स्ट्रैटेजी। जे.एस. सिंह नैनीताल द्वारा संपादित, केंद्रीय हिमालयी पर्यावरण संघ और ज्ञानोदय प्रकाशन, 1985

9. पूनिया एम., 1973 के चिपको आंदोलन को फिर से जांचना, पर्यावरण विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 6, संख्या 5, 2016, 839
10. सिन्हा एम., पर्यावरणवाद: गांधीवादी विकल्प के लिए पारंपरिक ज्ञान, बहुविषयक अध्ययन खंड 3 के वैश्विक जर्नल, अंक 4, मार्च 2014 आईएसएसएन: - 2348-0459
11. सल्ला एम., सत्याग्रह इन महात्मा गांधीज पॉलिटिकल फिलॉसफी, पीस रिसर्च, डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट यूनिवर्सिटी ऑफ क्वींसलैंड 1993
12. मिश्रा ए. और त्रिपाठी एस.एन., चिपको आंदोलन: वन संपदा को बचाने के लिए उत्तराखंड महिलाओं की बोली, नई दिल्ली: गांधी पीस फाउंडेशन, 1978, पृष्ठ 2

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by mean if any person having copyright issue or patent or anything other wise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue2
May 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Humanities

or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed I website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

Manish Sharma
Dr. Shweta Rai

******